Home Photos Cricket Tabloid HT Next Hindustan Cinema Travel Jobs Matrimonial Class

कुम्भ
गु, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो

हिन्दुस्तान

बृहस्पतिवार , 27 दिसंबर , 2007 | 01:57 IST

हिन्दुस्तान ई
हिन्दी फॉन्ट
मेरे लिंक



आज का अखबार

- दिल्ली संस्करण
- पटना संस्करण
- लखनऊ संस्करण
- रांची संस्करण
- सामग्री कोष

समाचार

- शहर
- राज्य
- देश
- विदेश
- खेल
- बिजनेस
- संपादकीय
- स्वास्थ्य
- भविष्यफल
- सिनेमा

पत्रिकाएं

- नई दिशाएं
- मेट्रो रीमिक्स
- फेस्ट
- हम तुम

पाठक

- रजिस्टर
- लॉगिन

लिंक भेजें । प्रिंटर योग्य

# हमने मोदी को वोट क्यों दिया

त्रिदिप सुहृद

Advertisement

FLY HIGH
PAY LOW

Best airfare deals only at makemytrip.com

गुजरात विधानसभा चुनाव में अपनी शानदार जीत के बाद अपने पहले भाषण में नरेन्द्र मोदी ने विजय का श्रेय गुजरात की जनता को दिया। इसे एक औपचारिकता या खाली लफ्फाजी भी कहा जा सकता है, लेकिन मोदी ने यह जीत, हर संभव अड़चन का मुकाबला करते हुए दर्ज की। पार्टी बंटी हुई थी, भाजपा के कई वरिष्ठ नेता पार्टी से बागी हो चुके थे, विश्व हिन्दू परिषद खुलेआम उनके विरोध पर उतरी हुई थी, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की सबसे बड़ी भूमिका अगर थी, तो तटस्थता की थी। लेकिन नरेन्द्र मोदी आश्वस्त थे कि गुजराती मतदाता उनके साथ है। और उन्हें समझता है। आखिर मोदी नाम की यह धारणा है क्या और इसका गुजराती अस्मिता से रिश्ता क्या है? इस धारणा को समझने के लिए हमें इसके दो कारक समझने होंगे। एक है- कुछ तरह की स्मृति का लोप और दूसरा है- कुछ तरह की वाणी का लोप।
पहले तो यह कि गुजरात अब गांधी की कर्मभूमि नहीं रहा। महात्मा गांधी 12 मार्च 1930 को साबरमती आश्रम से जो गए, तो कभी वापस नहीं लौटे। गुजराती मानस, समाज और अर्थव्यवस्था में गांधी का अस्तित्व बड़ा सीमित रहा है। गांधी निजी संपति के विरोधी थे। वे यह भी नहीं चाहते थे कि उनकी धरोहर का वारिस केवल उनका परिवार हो। उनकी यह दोनों बातें गुजराती व्यापारिक पूंजीवाद की मान्यताओं के उलट थी। जातिविहीन समाज की उनकी कल्पना तब भी गुजरात मध्यमवर्गीय परिवारों को बेचैन करती थी, आज भी करती है।

गांधी का दृढ़ विश्वास था कि कोई सच्चा सनातनी हिन्दू तभी हो सकता है जब वह एक सच्चा ईसाई, सच्चा मुसलमान और सच्चा पारसी भी हो। यह हमारे सच्चे धार्मिक होने की सांप्रदायिक तथा तंग सोच के विपरीत है। आज का गुजरात नहीं चाहता कि उसे गांधीवादी राजनीति की संभावओं या फिर गांधी की अनुपस्थिति की याद दिलाई जाए। निष्काम समाज सेवा को आज हम शक की नजर से देखते हैं। समाज सेवा का आधार बनती है हमारे अंदर से उठती प्रयास की भावना। लेकिन आज गुजरात में शक की यह भावना इतने गहरे घर कर गई है कि इन गरीबों, आदिवासियों, दलितों और गांधी जी की अगुआई में जरायम-पेशा आदिवासियों के लिए चलाए गए लोकसेवा अभियान परंपराओं को बिसरा चुके हैं। इसी कारण रविशंकर महाराज (जिन्हें हम आधुनिक गुजरात राज्य के संस्थापक के रूप में याद करते हैं), ठक्कर बापा, परीक्षित लाल मजूमदार और जुगतराम दवे जैसी हस्तियां हमारी स्मृति से लोप हो चुकी हैं। निष्काम सेवा की गांधीवादी परंपरा की अंतिम प्रतिनिधि इलाबेन भट्ट और उनकी सृजना 'सेवा' गुजराती मध्यमवर्ग के मानस के हाशिए पर जा चुकी है। दरिद्रनारायण के सेवक के रूप में गांधी आज हमें चाहिए ही नहीं। हम उनके खानदानी पेशे बनियागिरी का पालन शायद ज्यादा करना चाहेंगे।

वाणी लोप के दूसरे कारक की चर्चा करें तो, गुजरात में मुख्य मुद्दों पर एकमत बन चुका है। यह किसी भी समाज में अभूतपूर्व बात है। चाहे सवाल नर्मदा का हो, विकास का या एक पागल भीड़ से टकराने का, हमारी धारणाएं इस तरह एकजुट हो गई हैं कि हम किसी दूसरी तरह की आवाज उठाते ही नहीं। हम यह विश्वास करने लगे हैं कि हमारी इन धारणाओं पर सवाल उठाने वाले लोग केवल आलोचक ही नहीं, बल्कि गुजरात और गुजरातियों के दुश्मन हैं। हम अपनी उस छवि में कैद होकर रह गए हैं जो हमने स्वयं बनाई है। हम सोचते हैं कि हम बड़े प्रगतिशील उद्यमी हैं। हमने अपनी संपदा बनाई है। यह प्रगतिशीलता बड़ी अजीब शै है। इसके खुमार में हम सिर्फ आगे देख रहे हैं। हमारी यह अग्र-दृष्टि हमें पीछे मुड़ कर देखने से रोकती है। हमारी स्मृतियां हमारे लिए बोझ बन जाती हैं और हम उनसे पीछा छुड़ाना चाहते हैं। लेकिन हम हमेशा आगे देखना ही चाहेंगे। स्मृतियों की अनुपस्थिति हमें आत्मचिंतन से रोकती है। हमारी प्रगतिशीलता हमारे आत्म-ज्ञान को भोथरा कर देती है। हमारी उद्यमशीलता हमें सिर्फ आगे बढ़कर संभावनाओं की तलाश की ओर ले जाती है। उसी समय में हम यह भी सोचते हैं कि सभी बातों पर, यहां तक कि नैतिकता पर भी समझौता किया जा सकता है।

इस आत्म-विश्वास की दूसरी परत है कि शांत और शांतिप्रिय लोग हैं। हम अपने गर्व को एक औचित्य प्रदान करते हुए कहते हैं कि गुजरात में महिलाएं, बिना किसी को साथ लिए, देर रात तक, निर्भय होकर कहीं भी आ-जा सकती हैं।
यह सच है, लेकिन यह सच हमें यह नहीं देखने देता कि गुजरात की जनसंख्या में स्त्री-पुरुष अनुपात किस खतरनाक हद तक कम हो चुका है। इसी सच के साए में हम बड़ी आसानी से भूल जाते हैं कि गुजरात, घरेलू हिंसा की उच्चतम दर वाले राज्यों में से एक है। इस हिंसा में महिलाओं की मृत्यु को अप्राकृतिक मृत्यु की संज्ञा दी जाती है। अपने शांत और शांतिप्रिय लोग होने की धारणा के चलते हम बड़े आराम से नियमित रूप से होने वाले सांप्रदायिक और जातीय फसादों को एक तरफ सरका देते हैं। या तो उन्हें हम जीवन की सतत धारा में केवल अपवाद के रूप में देखते हैं या मुसलमानों और दलितों पर केवल पलटवार कह देते हैं। यह हमें किसी घटनाक्रम का साक्षी नहीं बनने देता। हम सिर्फ दर्शक बन कर रह जाते हैं। साक्षी का एक दायित्व होता है। साक्षी सत्य का वाहक होता है। एक दर्शक सिर्फ तमाशा देखता है, किसी दायित्वबोध के बिना। साक्षी को उसकी आत्मा कचोटती है। वह पश्चाताप करता है। सच बोलता है। लेकिन दर्शक अपनी ऐसी कोई जिम्मेदारी नहीं मानता।

तीसरी परत है, अस्मिता। आंशिक रूप से यह मात्र एक कल्पना है। आंशिक रूप से इसकी जड़ें हमारे समाज में हैं। इस अस्मिता की जड़ें गुजराती भाषा और सृजनात्मक अभिव्यक्ति में नहीं है। गुजराती साहित्यकारों को अफसोस है कि हम गंभीर साहित्य नहीं पढ़ते। गुजरात में कोई फिल्म उद्योग नहीं। गुजराती नाटक की मृत्यु हो चुकी है। गुजराती भाषा में सामाजिक विज्ञान पर लिखना एक विरोधाभास है। इस अस्मिता के संदर्भ में पश्चिम विशेषकर अमेरिकी उपभोक्तावाद तथा व्यापारिक अवसरवाद की एक अजीब भूमिका निभा रहा है। अहमदाबाद में न्यूयार्क नाम की अनेक इमारतें देखने को मिलती हैं। एक असंगत सा, स्टेच्यू ऑफ लिबर्टी भी अहमदाबाद में है। नरेन्द्र मोदी ने हमें कायल कर दिया है कि वे इस अस्मिता के सच्चे वाहक हैं कि वे ईमानदार हैं, प्रगतिशील हैं और अग्र-दृष्टि रखते हैं कि उन्हें अपनी अस्मिता पर गर्व है और वे गुजरात के इस चित्र के प्रति पूर्णतया समर्पित हैं। हमने उन्हें अपना वोट इसलिए दिया क्योंकि हम भी इस दावे को सही मानते हैं।

**लेखक समाजशास्त्री हैं**

## खोज एवं सामग्री कोष

पुराने अंक 1 अप्रैल, 2004 से उपलब्ध हैं।

अपने विचार व्यक्त करें

क्या आप इस बारे में अपनी राय और विचार अभिव्यक्त करना चाहेंगे? अपनी राय

- सामग्री कोष में खोज हेतु क्लिक करें।
- विस्तार से खोज के लिए क्लिक करें।

हिन्दुस्तानदैनिक.कॉम पर प्रकाशित करने हेतु यहां क्लिक करें।

हिन्दुस्तानदैनिक.कॉम, सर्वाधिकार सुरक्षित
इस साइट के बारे में अपने विचार हमें वेब द्वारा भेजने के लिए यहां क्लिक करें अथवा feedback@hindustantimes.com पर ईमेल करें। इस साइट पर विज्ञापन देने हेतु pooja.puri@hindustantimes.com . पर ईमेल करें।